धरोहर

भाग- 5

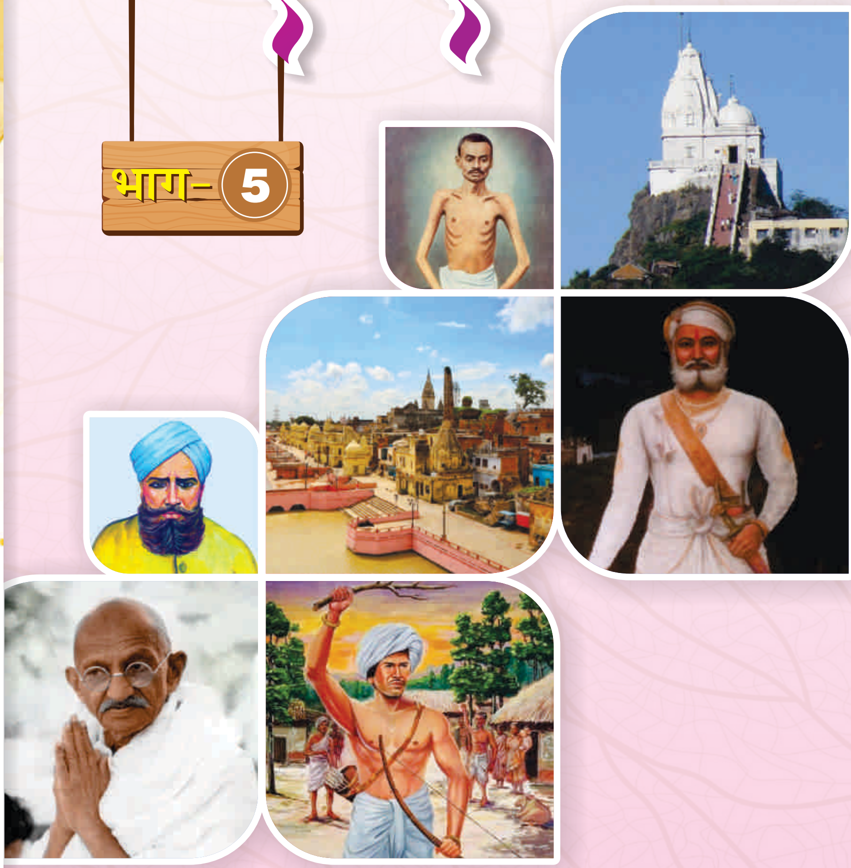

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर
समर्पण

स्कूल जाते समय रखें सावधानियाँ

1. पानी की बोतल में ताजा पानी छानकर भरें और बोतल में लोंग या थोड़ी सी सौंफ डाल लें, जिससे आपका पानी 6 घंटे तक अनछना नहीं होगा।

2. स्कूल में अपने टिफिन का ही भोजन करें, हर किसी अपरिचित का भोजन न करें। हो सकता है कि उसके टिफिन में न खाने योग्य अभक्ष्य-अमर्यादित पदार्थ हों।
3. आप अच्छे और संस्कारित बच्चों को दोस्त बनायें जिससे आपकी सोच का और आपका विकास होगा।
4. स्कूल के गार्डन में अथवा रास्ते में लगे हुए पौधों अथवा फूलों को नुकसान न पहुँचायें, न ही उन्हें तोड़ें। यह हिंसा का पाप है।
5. स्कूल की किसी भी चीज को अपने अध्यापक से बिना पूछे न लायें और न ही किसी छात्र की कोई वस्तु को लायें।
6. विद्यालय में मन लगाकर पढ़ें। अध्यापक की प्रत्येक बात को ध्यान से सुनें।
7. विद्यालय से लौटकर अपने कपड़े, जूते-मोजे, टाई, आई कॉर्ड, स्कूल बैग सही स्थान पर रखें।
8. मोजे जूते से बाहर रखें। जूते के अंदर रखने से उनमें बदबू आने लगती है।
9. अपना होमवर्क उसी दिन पूरा करने का प्रयास करें ताकि स्कूल में मिलने वाले दण्ड से आप बच सकें।
10. अपनी पढ़ाई के बारे में तथा स्कूल में कोई भी खास बात हुई हो या कोई घटना हुई हो तो अपनी मम्मी को अवश्य बतायें।

सर्वोदय ग्रन्थमाला पुष्प-1

धरोहर

भाग-5

(गौरवशाली नैतिक-अहिंसक मानव मूल्यों, पर्वों, तीर्थों तथा इतिहास की बोधक)

संकलन/संपादन

राजकुमार शास्त्री, उदयपुर

प्रकाशक

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

प्रथम संस्करण : 1000 प्रतियाँ
[चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, विक्रम संवत् 2080 (नववर्ष प्रारंभ)
22 मार्च 2023]

प्राप्ति स्थान : 18, आदिनाथ कॉलोनी, केशवनगर,
यूनिवर्सिटी रोड, उदयपुर (राज.)
मो. 91-9414103492

मूल्य : 75/-

प्यारे बच्चो! अच्छी पुस्तकें ज्ञान प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन हैं, सच्ची मित्र हैं। पुस्तकों से गुण-दोष, अच्छे-बुरे का ज्ञान होता है, जिससे शान्तिमय जीवन का निर्माण होता है इसलिए पुस्तकों को खराब न करें, फाड़ें नहीं, अपमान न करें।

मुद्रक : देशना कम्प्यूटर्स
82, पॉल्टी फार्म, आगरा रोड, जयपुर
मो. 9928517346

पुस्तक के संबंध में...

वर्तमान समय में भौतिक संसाधनों की वृद्धि आश्चर्यजनक रूप से हो रही है, साथ ही शिक्षा-चिकित्सा-व्यवसाय इत्यादि क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय प्रगति हो रही है, जिससे सर्वत्र आर्थिक समृद्धि भी दिखाई दे रही है; फिर भी यदि गम्भीरता से देखा जाए तो जहाँ शिक्षा और अर्थ जगत में उत्साहवर्धक उन्नति हुई है वहीं मानवीय मूल्यों और नैतिकता में बहुत ही ह्रास हो रहा है। हम अपनी संस्कृति को भुलाते जा रहे हैं। विद्यार्थी कैसे भी अधिक से अधिक अंक प्राप्त करके, अच्छे पैकेज वाला 'जॉब' करके कैसे भी धन अर्जित कर उसे भोग विलास में लगाकर अपने जीवन की सार्थकता का अनुभव कर रहे हैं।

हमारे देश की संस्कृति या विरासत अन्य-अन्य माध्यमों से छात्रों तक पहुँचाई जाती रही है फिर भी अनेक व्यक्तित्व, पर्व ऐसे हैं जिनके बारे में भारत देश की अधिकांश जनसंख्या अपरिचित है, ऐसे अनेक प्रेरक प्रसंग हैं, जो हमारे लिए दिशा बोध देते हैं इन सभी का ज्ञान कराने की भावना से हमने यह 'धरोहर' पुस्तक तैयार की है।

अध्यापकों से निवेदन है कि विश्व गुरु के रूप में प्रसिद्ध महान् भारत देश की नैतिक, अहिंसक, संस्कृति एवं गौरवशाली इतिहास की झलक दिखलाने वाली इस पुस्तक का उत्साहपूर्वक अध्यापन कर अपनी 'धरोहर' को बच्चों तक पहुँचाने में अपना सहयोग करें।

छात्रों से भी अनुरोध है कि जिन विषयों के अंक, अंक सूची में अंकित होते हैं, जिनके आधार से नौकरी मिलती है वे ही विषय काम के हैं - ऐसा विचार त्याग कर 'जो हमारे विचार और आचरण को प्रभावित करे, जो हमारे जीवन का निर्माण करे' - ऐसी पुस्तक को भी अपने जीवन में उत्साह पूर्वक अवश्य ही पढ़ना चाहिए।

सुभाषितकार ने कहा है –

राष्ट्रं समाजतः सिद्ध्येत्, समाजो व्यक्तिभिस्तथा।

व्यक्तिश्चरित्रतः सिद्ध्येत्, चरित्रं तूच्चशिक्षया।।

राष्ट्र का निर्माण समाज से होता है, समाज का निर्माण व्यक्तियों से होता है, व्यक्ति का निर्माण चरित्र से होता है और चरित्र का निर्माण उच्च और श्रेष्ठ शिक्षा से होता है।

बालकों के चरित्र निर्माण की दिशा में यह पुस्तक एक छोटा-सा कदम है जो सही दिशा की ओर ले जाएगा। आपके जीवन को उत्साह व प्रसन्नता से परिपूर्ण करने के लिए यह पुस्तक आपके हाथों में है।

जिन लेखकों/कवियों की सामग्री पुस्तक में सम्मिलित की गई है उन सभी के प्रति हम आभारी हैं।

आशा है विद्यालय संचालकों/अध्यापकों और छात्रों के उत्साह/सहयोग से हमारा यह प्रयास सार्थक होगा।

डॉ. अरविन्द जैन
संयोजक

राजकुमार शास्त्री
संपादक

विषयानुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृ.सं.
1.	प्रार्थना	7
2.	प्रेरक प्रसंग –	8
	■ महानता के गुण	8
	■ खून नहीं पी सकता	9
3.	हमारे गौरवशाली महापुरुष –	11
	■ कटक के मंजू चौधरी	11
	■ दानवीर भामाशाह	12
4.	जरा याद इन्हें भी कर लो –	15
	■ हुकमचन्द जैन कानूनगो	15
	■ बिरसा मुंडा	16
5.	एकांकी : छू गया	19
6.	हमारे पर्व –	22
	■ श्रीराम नवमी	22
	■ श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	23
	■ श्री महावीर जयन्ती	24
7.	हमारे तीर्थ : अयोध्या	25
8.	कविताएँ –	27
	■ अच्छे बच्चे	27
	■ उन्नति	28
	■ अंगों की सार्थकता	29
	■ जल	30
9.	सदाचार –	32
	■ अतिथि सत्कार	32
	■ सॉरी दादाजी	33
10.	जीवन निहारें–जीवन निखारें –	36
	■ आत्म–निरीक्षक बनें	36
11.	शिक्षाप्रद कहानियाँ –	42
	■ कपट की खुल जाती है पोल	42
	■ न्यायप्रियता	45
	■ लोभ का फल	47
12.	सुभाषित : विनय	51

लक्ष्य दूर है यही सोचकर, हार मान जो रह जाते।
सर्व सुलभ साधन पाकर भी, असफलता ही वे पाते।।
धीरे-धीरे कदम बढ़ाते, न डरते जो विघ्न-भयों से।
हिम्मत कर जो आगे बढ़ते, वही सफलता हैं पाते।।

विघ्न भयों से ना घबराना, हिम्मत कर बढ़ते जाना।
कदम रुके ना, शीश झुके ना, हो चाहे विपरीत जमाना।।
डरना तो मरना है बंधु! निर्भय होकर कदम बढ़ाओ।
धीर-वीर हो नित ही चलना, है तुमको इतिहास बनाना।।

उद्यम से ही कार्य सिद्ध हों, नहीं सोचने से होते।
कर पर जो कर धरकर बैठे, व्यर्थ समय है वे खोते।।
राजा हो या रंक जगत में, जो भी आलस करते हैं,
असफल होकर बैठे रहते, जीवनभर वे हैं रोते।।

1 प्रार्थना

अखिल विश्व में, सब जीवों को, मंगलमय उत्कर्ष मिले।
विनय, विवेक, जगे जन-जन में, यश वैभव व हर्ष मिले।।
मेरी सहज-भावना-प्रभुवर! सबमें समता सुमन खिलें।
बैर भाव, अभिमान छोड़कर, सब आपस में गले मिलें।।

जगतीतल के सब जीवों का, जीवन मंगलमय हो।
संयम, शील, विवेक-बुद्धि से, दुष्कर्मों का क्षय हो।।
रहे परस्पर, प्रेम सभी में, नहीं किसी को भय हो।
सहज भाव से 'सहज' रहें सब, जीवन ज्योतिर्मय हो।।

2 प्रेरक प्रसंग

महानता के गुण

अपने साधना-काल में एक दिन महावीर एक ऐसे निर्जन स्थान पर ठहरे, जहाँ एक यक्ष का वास था। वह कायोत्सर्ग मुद्रा में ध्यान-मग्न हो गये। रात को यक्ष आया तो अपने स्थान पर एक अपरिचित व्यक्ति को देखकर आग-बबूला हो गया। बड़े जोर से दहाड़ा। सारी वनस्थली गूँज उठी। वन्य जीव भयभीत होकर इधर-उधर दौड़ने लगे, लेकिन महावीर का ध्यान भंग नहीं हुआ। तब यक्ष ने हाथी आदि के रूप धारण करके उन्हें सताया, फिर भी वह विचलित न हुए। अन्त में उसने भयंकर विषधर बनकर उन पर दृष्टिपात किया, लेकिन उनके विष का उन पर कोई प्रभाव न पड़ा। यह देखकर यक्ष ने आगे बढ़कर पूरे वेग से उनके पैर के अंगूठे पर मुँह मारा, महावीर फिर भी अप्रभावित रहे। यक्ष ने अब अन्तिम प्रयत्न किया। वह उनके शरीर पर चढ़ गया और गले पर उन्हें काटा। पर महावीर, महावीर ठहरे, यथावत् ध्यान में मग्न रहे। विवश होकर नागरूपी यक्ष नीचे उतर आया और पस्त होकर उनसे कुछ कदम की दूरी पर बैठ गया।

ध्यान पूर्ण होने पर महावीर ने आँखे खोलीं तो उन्हें विषैला नाग दिखाई दिया। उन्होंने उसकी भी मंगल की कामना की। सर्प का विष अमृत के रूप में परिणत हो गया।

इस घटना से यह स्पष्ट है कि अपने कषायों को जीतने के लिए मन की एकाग्रता, समता और प्रेम सम्पादित करके ही व्यक्ति महान बन सकता है, महावीर का पद प्राप्त कर सकता है।

खून नहीं पी सकता

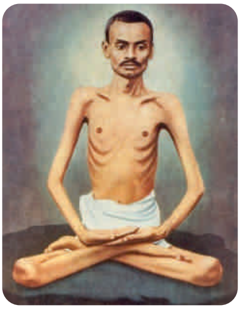

महात्मा गाँधी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है – "मैंने गुरु नहीं बनाया, किन्तु मुझे कोई गुरु मिले हैं तो वे हैं रायचन्द्र भाई।"

रायचन्द्र भाई बम्बई में जवाहरात का व्यापार करते थे। उन्होंने एक व्यापारी से अग्रिम सौदा किया।

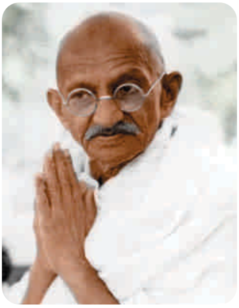

संयोग की बात, जवाहरात के मूल्य आसमान छूने लगे, यदि रायचंदभाई को उनके जवाहरात वह व्यापारी दे तो उसे इतना घाटा लगे कि उसको घर तक नीलाम करना पड़े।

श्रीमद् रायचन्द्रजी को जब जवाहरात के बाजारभाव का पता लगा तो वे उस व्यापारी की दुकान पर पहुँचे। उन्हें देखते ही व्यापारी ने कहा – "मुझे कुछ भी करना पड़े मैं आपको जवाहरात खरीद कर दूँगा, आप चिन्ता न करें।"

रायचन्द्रजी ने कहा – "हम दोनों की चिन्ता का कारण यह लिखा-पढ़ी है, इसे समाप्त कर दिया जाए तो दोनों की चिन्ता समाप्त हो जाएगी।"

रायचन्द्रजी ने उस करारनामा के टुकड़े-टुकड़े करते हुए कहा – 'इस लिखा-पढ़ी से तुम बंध गये थे। बाजारभाव बढ़ने से मेरा बकाया लूँ तो तुम्हारी क्या दशा होगी? रायचंद्र दूध पी सकता है, खून नहीं।"

वह व्यापारी रायचंद्र भाई से इतना प्रभावित हुआ कि उन्हें साक्षात् देवता मान उनके पैरों पर गिर पड़ा।

ऐसे उदार महापुरुषों के चरित्र से हमारी समाज व्यापार के सात्त्विक व निश्छल गुणों की शिक्षा लेकर – झूठ-फरेब, ठगी-मक्कारी, छल-कपट आदि से कोशों दूर रह सकती है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – रिक्त स्थानों की पूर्ति करो –

क. रायचंद्र भाई .... व्यापार करते थे। (जवाहरात/किराना)

ख. महावीर एक .... स्थान पर ठहरे। (घर/निर्जन)

ग. महावीर की मंगल कामना से साँप का विष . ... रूप में परिणत हो गया। (अमृत/जल)

घ. रायचंद्र दूध पी सकता है................नहीं। (खून/अमृत)

प्रश्न 2 – मिलान कीजिए –

क.	महावीर	अ.	दृष्टिपात
ख.	यक्ष	ब.	कायोत्सर्ग
ग.	विषधर	स.	आगबबूला
घ.	वन्य जन्तु	द.	भयभीत

प्रश्न 3 – संक्षिप्त में उत्तर दीजिए –

क. महावीर को अपने स्थान पर देख यक्ष ने क्या किया?

ख. रायचन्द्रजी की घटना से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

ग. यदि आप महावीर स्वामी के स्थान पर होते तो क्या करते?

प्रश्न 4 – पाठ आधारित प्रश्न –

आपको पता है महावीर भगवान का सिद्धांत विश्व प्रसिद्ध है – **'जिओ और जीने दो'** आप इसके बारे में क्या सोचते हैं अपने अध्यापक की सहायता से दोस्तों से चर्चा करो।

3 हमारे गौरवशाली महापुरुष

कटक के मंजू चौधरी

मंजूनाथजीका जन्म 1720 में उत्तरप्रदेश के झांसी जिले की महरौनी तहसील के कुम्हेड़ी गाँव में सामान्य परिवार में हुआ। बचपन में ही माता-पिता का देहांत हो गया। कुसंगति में जुआ खेलकर सारी सम्पत्ति बरबाद कर दी। किसी सम्बन्धी ने सहयोग नहीं किया तो अकेले ही धन कमाने के लिए परदेश निकल गए। कई महीनों तक एक दिन दो रुखी रोटी और एक दिन उपवास जैसा समय निकला और वे घूमते हुए सन् 1740 में नागपुर आ गये। भाग्य ने साथ दिया और छोटे से व्यापार से शुरुआत करके वे सम्पन्न हो गये और नागपुर के मराठा सरदार राजा रघु भौंसले के प्रिय व्यक्तियों में शामिल हो गये। रघु भौंसले ने बंगाल के नवाब अलीवरदी खाँ से युद्ध कर उड़ीसा उनसे छीन लिया। बाद में मंजूनाथ कटक के राजा दरबार के चौधरी बन गये। उधर नवाब अपना राज्य वापिस पाने के लिए युद्ध की तैयारी कर रहा था। नवाब से युद्ध करने का सामर्थ्य किसी में नहीं था तो वीर मंजूनाथ ने सेना संगठित कर नवाब को पराजित कर दिया। इससे राजा बहुत प्रसन्न हुए और मंजूनाथ को राज्य का दीवान बना दिया। उनकी सालाना आय 50 लाख रुपये थी। इन्होंने 1760 में प्राचीन जैन तीर्थ और सिद्ध क्षेत्र खण्डगिरि (उड़ीसा) में एक विशाल मंदिर बनवाया, एक विशाल विधान का आयोजन किया। अपने भांजों को भी अपने पास बुला लिया।

बाद में अपनी जन्मभूमि कुम्हेड़ी जाकर अचल सिंह प्रधान से पुण्यास्त्रव कथा कोश की रचना कराई। जिनधर्म की प्रभावना के अनेक कार्यों के कारण मंजू चौधरी को पुण्याधिकारी की उपाधि दी गई। मंजूनाथजी के हृदय की विशालता को देखिये कि जिन सम्बन्धियों ने

उनकी सहायता करने से मना कर दिया उन्होंने उनकी बहुत सहायता की और अनेक ऐतिहासिक कार्य किये। इनका निधन सन् 1785 में हुआ।

मंजू चौधरी के बाद उनके भांजे भवानी दास उनके स्थान पर नियुक्त किये गये। भवानीदास की पत्नी चम्पाबाई थीं। इन्होंने ग्रंथों के संरक्षण के लिए लगभग 50 ग्रन्थों की प्रतिलिपि कराई। उनकी भाभी धूमाबाई ने खण्डगिरि में एक छोटा मंदिर भी बनवाया।

संस्कारों की यह सुन्दर परम्परा आगे की पीढ़ियों तक चलती रही। इसलिए ज्ञानियों ने कहा कि विरासत में 'सम्पत्ति नहीं, संस्कार दीजिए।'

दानवीर भामाशाह

राजपूत सम्राट महाराणा प्रताप के परम सहयोगी भामाशाह का जन्म 1547 को चित्तौड़गढ़ में हुआ था। उनके पिता भारमल कावड़िया जैन थे और उन्हें राणा सांगा ने रणथम्भौर का किलेदार बनाया था। जब तक भारमल्ल रणथम्भौर के किलेदार रहे तब तक रणथम्भौर को मुगल (मुस्लिम) बादशाह नहीं जीत पाये। भारमल्ल चित्तौड़गढ़ की रक्षा करते हुये शहीद हो गये। भामाशाह के परिवार की कई पीढ़ियों ने राष्ट्र सेवा को अपना कर्तव्य माना। उनके पुत्र जीवाशाह और पौत्र अक्षयराज ने भी मेवाड़ के प्रधानमंत्री के रूप में देश सेवा की। भामाशाह के भाई ताराचंद ने सादड़ी नगर बसाया। दोनों भाई साहित्य प्रेमी थे। वे विद्वानों, कवियों और कलाकारों को खूब प्रोत्साहित करते थे। उन्होंने कई पुस्तकें लिखवाईं।

भामाशाह बहुत धनवान थे लेकिन वे विशाल धन का अपने आपको मालिक नहीं मात्र व्यवस्थापक मानते थे। इतिहासकार कर्नल जेम्स टॉड के अनुसार भामाशाह ने संकट आने पर महाराणा प्रताप को अपना इतना धन समर्पित किया जिससे 25 हजार व्यक्तियों के जीवन का 12 वर्ष तक पूरा खर्च चल सकता था। इतिहासकार रामवल्लभ सोमानी ने लिखा – यदि भामाशाह उस समय महाराणा प्रताप की मदद नहीं करते तो महाराणा

प्रताप मेवाड़ छोड़कर चले जाते। यहाँ का इतिहास कुछ और ही होता। भामाशाह की सेवाओं से मेवाड़ की रक्षा ही नहीं हुई समस्त हिन्दू जाति पर महान उपकार हुआ।

भामाशाह ने अकबर के द्वारा दिये धन-वैभव के लोभ को ठुकराकर परम देशभक्ति का परिचय दिया और सादगी और संघर्ष का जीवन जीना पसंद किया। भामाशाह ने दानवीरता के साथ युद्ध में भी वीरता का परिचय दिया। भामाशाह और उनके भाई ताराचंद हल्दीघाटी युद्ध में सेनापति के रूप में लड़े। वे जिस मोर्चे पर तैनात थे वहाँ से मुगल सेना को छह कोस तक भागना पड़ा। इतिहास में मेराथान के नाम से प्रसिद्ध दिवेर युद्ध विजय में भामाशाह की प्रमुख भूमिका थी। त्याग और वीरता के प्रतीक भामाशाह का निधन जनवरी 1600 में उदयपुर में हुआ। भारत सरकार ने दिसम्बर 2000 में भामाशाह के सन्मान में डाक टिकट जारी किया।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 - वस्तुनिष्ठ प्रश्न -

1. मंजूनाथजी का जन्म किस सन् में हुआ था?

   (क) 1720 (ख) 1721 (ग) 1722 (घ) 1723

2. 1740 में मंजूनाथ कहाँ आ गये?

   (क) रायपुर (ख) जोधपुर (ग) नागपुर (घ) जयपुर

3. मंजूनाथजी ने कहाँ जिनमंदिर बनवाया?

(क) सम्मेदशिखर ☐ (ख) खण्डगिरि ☐

(ग) द्रोणगिरि ☐ (घ) गिरनार ☐

4. भामाशाह का जन्म कहाँ हुआ था?

(क) उदयपुर ☐ (ख) भीलवाड़ा ☐

(ग) चित्तौड़गढ़ ☐ (घ) प्रतापगढ़ ☐

5. भामाशाह का जन्म किस सन् में हुआ था?

(क) 1546 ☐ (ख) 1547 ☐

(ग) 1548 ☐ (घ) 1549 ☐

6. भामाशाह का निधन किस सन् में हुआ था?

(क) 1500 ☐ (ख) 1700 ☐

(ग) 1800 ☐ (घ) 1600 ☐

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति करो –

क. भामाशाह के पिता .... जैन थे। (काठियावाड़/चौधरी)

ख. मंजूनाथजी का निधन .... सन् में हुआ। (1720/1785)

ग. भामाशाह ने .... के साथ युद्ध में वीरता का परिचय भी दिया। (उदासीनता/दानवीरता)

घ. वीर मंजूनाथ ने सेना संगठित कर .... को पराजित किया। (राजा/नवाब)

प्रश्न 3 – संक्षिप्त में उत्तर दीजिए –

क. मंजूनाथजी ने कहाँ जिनमंदिर बनवाया?

ख. भामाशाह का निधन किस सन् में हुआ?

ग. भामाशाह के संकट के समय महाराणा प्रताप ने कितना धन समर्पित किया?

घ. मंजूनाथजी ने ग्रंथों के संरक्षण के लिए कितने ग्रंथों की प्रतिलिपि कराई?

प्रश्न 4 – पाठ के आसपास –

दानवीर भामाशाह जैसे अन्य दानवीरों के बारे में खोजकर उनके चित्र अपनी कक्षा में लगाओ और उनके बारे में अन्य जानकारी एकत्रित करिए।

4 जरा याद इन्हें भी कर लो

हुकमचन्द जैन कानूनगो

भारतीय इतिहास में 1857 की क्रांति का महत्त्वपूर्ण योगदान है। कहा जाता है कि इसी क्रांति से भारत के अंग्रेजों से स्वतंत्र होने के प्रयासों का शुभारम्भ हुआ। इस क्रांति में अपने प्राण अर्पित करने वाले लाला हुकमचन्दजी का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा। लाला हुकमचन्दजी ने अपनी शिक्षा और प्रतिभा के बल पर मुगह बादशाह शाह जफर के दरबार में उच्च पद प्राप्त किया। सन् 1841 में मुगल बादशाह ने लालाजी को झांसी और करनाल जिले का कानूनगो और प्रबन्धकर्ता नियुक्त किया। इस बीच अंग्रेजों ने हरियाणा को अपने आधीन कर लिया। सन् 1857 में जब स्वतंत्रता का बिगुल बजा तो लालाजी ने अंग्रेजों के विरुद्ध कुछ करने का विचार किया। उन्होंने दिल्ली आकर बादशाह जफर से भेंट की और एक देशभक्त सम्मेलन में शामिल हुए, इस सम्मेलन में झांसी की रानी लक्ष्मीबाई और तात्या टोपे जैसे देशभक्त भी शामिलथे।

जब अंग्रेजों की सेना झांसी होकर दिल्ली पर हमला करने जा रही थी, तब उस सेना पर लाला हुकमचन्दजी ने हमला कर उसे रोकने का प्रयास किया। लालाजी ने बादशाह जफर को एक पत्र लिखकर सेना की सहायता मांगी, पर उस पत्र का कोई उत्तर नहीं आया और इसी बीच अंग्रेजों ने बादशाह जफर को पकड़ कर रंगून (म्यामार) जेल में डाल दिया। जब अंग्रेज अधिकारी ने बादशाह की फाइलों को देखा तो उसमें लालाजी का लिखा हुआ पत्र उन्हें मिल गया और उन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध पत्र लिखने

वाले लालाजी के खिलाफ कड़ी कार्यवाही का आदेश दिया। लालाजी के घर पर छापा मारकर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया।

18 जनवरी 1858 को उन्हें फांसी की सुजा सुनाई गई और लालाजी के मकान में ही उन्हें फाँसी दे दी गई। अंग्रेजों ने अत्याचार करते हुए डर पैदा करने के लिए लालाजी का शव उनके सम्बन्धियों को न देकर दफना दिया और लालाजी के 13 साल के भतीजे फकीरचन्द जैन को पकड़ कर वहीं फाँसी पर चढ़ा दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लाल हुकमचन्दजी की याद में झाँसी में उनके नाम पर पार्क बनाया गया और उनकी प्रतिमा विराजमान की गई।

बिरसा मुंडा : स्वतंत्रता सेनानी, धार्मिक नेता

बिरसा मुण्डा का जन्म 15 नवम्बर 1875 के दशक में एक गरीब किसान परिवार में हुआ था। मुण्डा एक जनजातीय समूह था जो छोटा नागपुर पठार (झारखण्ड) निवासी थे। सन् 1900 में आदिवासी लोगों को संगठित करने के आरोप में ब्रिटिश सरकार ने बिरसाजी को गिरफ्तार कर लिया तथा उन्हें 2 साल का दण्ड दिया।

आरंभिक जीवन – इनका जन्म मुंडा जनजाति के पिता–सुगना पुर्ती (मुंडा) और माता–करमी पुर्ती (मुंडा) के सुपुत्र बिरसा पुर्ती (मुंडा) के रूप में 15 नवम्बर 1875 को झारखण्ड के खुटी जिले के उलीहातु गाँव में हुआ था, जो निषाद परिवार से थे। साल्गा गाँव में प्रारम्भिक पढ़ाई के बाद इन्होंने चाईबासा जी.ई.एल. चार्च (गोस्नर एवंजिलकल लुथार) विद्यालय में पढ़ाई की थी। इनका मन हमेशा अपने समाज में लगा रहता था। ब्रिटिश शासकों द्वारा की गयी बुरी दशा पर सोचते रहते थे। उन्होंने मुण्डा/मुंडा लोगों को अंग्रेजों से मुक्ति पाने के लिये अपना नेतृत्व प्रदान किया। 1894 में मानसून के छोटा नागपुर पठार, छोटा नागपुर में असफल

होने के कारण भयंकर अकाल और महामारी फैली हुई थी। बिरसा ने पूरे मनोयोग से अपने लोगों की सेवा की।

मुंडा विद्रोह का नेतृत्व – 1 अक्टूबर 1894 को नौजवान नेता के रूप में सभी मुंडाओं को एकत्र कर इन्होंने अंग्रेजों से लगान (कर) माफी के लिये आन्दोलन किया। 1895 में उन्हें गिरफ़्तार कर लिया गया और हजारीबाग केन्द्रीय कारागार में दो साल के कारावास की सजा दी गयी। लेकिन बिरसा और उसके शिष्यों ने क्षेत्र की अकाल पीड़ित जनता की सहायता करने की ठान रखी थी और जिससे उन्होंने अपने जीवन काल में ही एक महापुरुष का दर्जा पाया। उन्हें उस इलाके के लोग 'धरती आबा' के नाम से पुकारा और पूजा करते थे। उनके प्रभाव की वृद्धि के बाद पूरे इलाके के मुंडाओं में संगठित होने की चेतना जागी।

1897 से 1900 के बीच मुंडाओं और अंग्रेज सिपाहियों के बीच युद्ध होते रहे और बिरसा और उसके चाहने वाले लोगों ने अंग्रेजों की नाक में दम कर रखा था। अगस्त 1897 में बिरसा और उसके चार सौ सिपाहियों ने तीर कमानों से लैस होकर खूँटी थाने पर धावा बोला। 1898 में तांगा नदी के किनारे मुंडाओं की भिड़ंत अंग्रेज सेनाओं से हुई जिसमें पहले तो अंग्रेजी सेना हार गयी लेकिन बाद में इसके बदले उस इलाके के बहुत से आदिवासी नेताओं की गिरफ़्तारियाँ हुईं।

जनवरी 1900 में डोम्बरी पहाड़ पर एक और संघर्ष हुआ था जिसमें बहुत–सी औरतें व बच्चे मारे गये थे। उस जगह बिरसा अपनी जनसभा को सम्बोधित कर रहे थे। बाद में बिरसा के कुछ शिष्यों की गिरफ्तारियाँ भी हुईं। अन्त में स्वयं बिरसा भी 3 फरवरी 1900 को चक्रधरपुर के जमकोपाई जंगल से अंग्रेजों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। बिरसा ने अपनी अन्तिम साँसें 9 जून 1900 ई. में रांची कारागार में लीं। उन्हें अंग्रेजों द्वारा जहर देकर मारा गया। आज भी बिहार, उड़ीसा, झारखंड, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल के आदिवासी इलाकों में बिरसा मुण्डा को भगवान की तरह पूजा जाता है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. भारतीय इतिहास में कौनसी क्रांति का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है?
   (क) 1947 ☐ (ख) 1857 ☐
   (ग) 1901 ☐ (घ) 1808 ☐
2. मुण्डा कौनसा समूह था?
   (क) जनसहयोगी ☐ (ख) जनजातीय ☐
   (ग) ब्रिटिश ☐ (घ) छात्रसमूह ☐
3. लालाजी को 18 जनवरी....................को फांसी दी गई।
   (क) 1857 ☐ (ख) 1947 ☐
   (ग) 1858 ☐ (घ) 1909 ☐
4. बिरसा ने अपनी अंतिम सांसें कहाँ लीं?
   (क) खूँटी थाने में ☐ (ख) नागपुर थाने में ☐
   (ग) रांची कारागार में ☐ (घ) हजारी बाग में ☐
5. लालाजी के भतीजे का क्या नाम था?
   (क) फकीरचन्द ☐ (ख) हुकमचन्द ☐
   (ग) हेमचन्द ☐ (घ) ताराचन्द ☐

प्रश्न 2 – लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. झाँसी में लाला हुकमचन्दजी की याद में क्या बनाया गया?
2. ब्रिटिश सरकार ने मुंडाजी को गिरफ्तार क्यों किया?
3. सन् 1841 में मुगल बादशाह ने क्या किया?
4. बिरसाजी को अंग्रेजों द्वारा कैसे मारा गया?
5. 1857 की क्रांति में कौन-कौन से देश भक्त शामिल थे?

प्रश्न 3 – पाठ से आगे –

बिरसा मुंडा एवं हुकमचन्द जैन कानूनगो जैसे अन्य 5 क्रान्तिकारियों के नाम ढूँढ़िए जो आपके आस-पास से देश के लिए शहीद हुए हों।

5 एकांकी : छू गया

(**समय :** प्रात:काल, उत्तम क्षमा का दिन। स्थान – मंदिर)

(शांतिलालजी धोती–दुपट्टा पहने हुए मंदिर में दर्शन कर रहे हैं, विवेक नाम का बालक दर्शन कर प्रदक्षिणा लगा रहा है, उसी समय विवेक का शांतिलालजी से स्पर्श हो जाता है।)

शांतिलाल – (क्रोध में) अरे – दिखता नहीं है क्या? अंधा है, जो मुझसे छू गया?

विवेक – दादाजी! आप पूजा–प्रक्षाल कीजिए। इतने क्रोधित क्यों होतेहैं?

शांतिलाल – क्रोधित नहीं होऊँगा तो क्या होऊँगा! तुम्हें कुछ विवेक है ही नहीं, अभी दो मिनट दर्शन किए और चले जाओगे। आज दशलक्षण का पहला दिन है। पूजन–प्रक्षाल करना चाहिए, जो तुमसे होगा नहीं।

विवेक – आप पहला दिन किस रूप में मनाते हैं?

शांतिलाल – उत्तम क्षमा के रूप में।

विवेक – (हँसते हुए) दादाजी, आपने अभी–अभी उत्तम क्षमा का रूप दिखाया है न?

शांतिलाल – (क्रोध में) तू मुझे समझाता है। मालूम नहीं पड़ता, मुझे फिर से स्नान करना पड़ेगा, धोती–दुपट्टे बदलने होंगे।

विवेक – वह तो ठीक है, आपके जैसे नियम हैं, वैसा कीजिए, पर आप आज उत्तम क्षमा का दिन मना रहे हैं, तो कुछ धैर्य रखें। मुझे क्षमा कीजिए।

शांतिलाल – (क्रोध में) मुझसे बहस करता है, तुझे कैसे क्षमा करूँगा? तेरे बाप से बात करूँगा कि छोरे को तुमने क्या सिखायाहै?

विवेक – दादाजी, आप मुझे क्षमा कीजिए। मैं जल्दी में आपसे छू गया, मैंने जान–बूझकर आपको नहीं छुआ है।

शांतिलाल – तूने जान–बूझकर छुआ है।

विवेक – दादाजी, जान–बूझकर नहीं छुआ है।

शांतिलाल – छुआ है।

विवेक – नहीं छुआ।

(पंडितजी का प्रवेश)

पण्डितजी – आप लोग ये क्या कर रहे हैं? आज पहला दिन उत्तम क्षमा का दिन है और आप आज भी क्रोध कर रहे हैं, वह भी मंदिरजी में। कम से कम आज तो पूरा दिन शांति से व्यतीत करना चाहिए।

शांतिलाल – पर पण्डितजी......!

पण्डितजी – अरे भाई! वैसे भी क्षमा धर्म एक दिन का नहीं है। प्रत्येक दिन का है, परन्तु कम से कम आज तो एक–दूसरे को क्षमा करते। अभी पूजन करेंगे तो आप गायेंगे – "गाली सुनि मन खेद न आनो।"

विवेक – पण्डितजी! मैं गलती से जरा–सा छू क्या गया, ये क्रोधित होकर इतना लाल–पीले हो रहे हैं जबकि मैंने अपनी गलती मानकर क्षमा भी माँग ली है।

शांतिलाल – पण्डितजी! ये लड़का जान–बूझकर छू गया था। अब मुझे फिर स्नान करना होगा।

पण्डितजी – पवित्रता स्नान करने से नहीं आती। पवित्रता मन पवित्र होने से होती है। गुस्सा करने से आपका मन तो अपवित्र हो गया, जो स्नान करके पवित्र नहीं होगा। आप स्नान अवश्य करें, कपड़े भी बदलें, पर सब शांतिपूर्ण तरीके से। शुद्धता आदि में विवेक रखना ही चाहिए, पर क्रोधपूर्वक नहीं, क्षमा पूर्वक।

शांतिलाल – ठीक है पण्डितजी, आपने ठीक कहा।

विवेक – पण्डितजी, आपने ठीक कहा, अब हम ध्यान रखेंगे।

(पटाक्षेप)

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. मन्दिरजी में विवेक का किससे स्पर्श हो जाता है?

   (क) शांतिलालजी　　(ख) जमनालालजी

   (ग) मोहनलालजी　　(घ) पंडितजी से

2. दशलक्षण का पहला दिन किस रूप में मनाते हैं?

   (क) शौच　　(ख) संयम

   (ग) क्षमा　　(घ) धर्म

3. विवेक रखना चाहिए.....?

   (क) क्रोध पूर्वक　　(ख) क्षमा पूर्वक

   (ग) मान पूर्वक　　(घ) पूजा पूर्वक

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति करो –

क. हमें अपनी गलती .... क्षमा माँग लेना चाहिए। (मानकर/झुठला कर)

ख. .... आदि में विवेक रखना ही चाहिए। (शुद्धता/अशुद्धता)

ग. क्षमाभाव का विपरीत भाव .... है। (क्रोध/मान)

घ. उत्तम क्षमा .... का पहला दिन है। (अष्टाह्निका/दशलक्षण)

प्रश्न 3 – लघूत्तरात्मक प्रश्न –

क. पण्डितजी ने दादाजी और विवेक को क्या सीख दी?

ख. शांतिलालजी और विवेक में बहस क्यों हो गई?

ग. हमें उत्तम क्षमा का दिन कैसे मनाना चाहिए?

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

उत्तम क्षमा जैसे अन्य 9 और गुणों को खोजिए, जिनसे हम अपने जीवन को उत्कृष्ट बना सकते हैं। आप अध्यापक की सहायता या इंटरनेट की सहायता ले सकते हैं।

6 हमारे पर्व

राम-कृष्ण-महावीर जयन्ती

हमारे भारत देश में अनेक महापुरुषों का जन्म हुआ है, जिन्होंने तत्कालीन समाज को नई दिशा प्रदान की, धर्म मार्ग की स्थापना कर न्याय-नीति पर चलने की प्रेरणा दी। जिनके कारण हमारा भारत देश महान देश व पवित्र देश के रूप में जाना जाता है।

उन महापुरुषों की शिक्षाओं को ग्रहण करने और उनका स्मरण कर अपने जीवन को उन जैसा बनाने के लिए उन की जन्म-जयन्तियाँ मनाई जाती हैं।

हम इस पाठ में भारत देश को पवित्र करने वाले श्री राम, श्रीकृष्ण और श्री महावीर स्वामी भी जन्म जयन्ती का परिचय प्राप्त करेंगे।

श्री राम नवमी

हिन्दू परम्परा में रामायण के बालकांड के अनुसार चैत्र शुक्ल नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क लग्न अभिजीत मुहूर्त में दोपहर 12.05 पर श्री राम का जन्म हुआ। इनके पिता इक्ष्वाकु वंशज, सूर्यवंशी राजा दशरथ, माता कौशल्या थीं। राम का जन्म मध्याह्न में हुआ इसलिए रामनवमी का अनुष्ठान मध्याह्न में किया जाता है।

जैन परंपरानुसार जब बीसवें तीर्थंकर मुनिसुव्रतनाथ भगवान विचरण कर रहे थे उस समय श्री राम का जन्म हुआ था।

राम की पितृ भक्ति, भ्रातृ स्नेह एवं सुशासन आज भी याद किया जाता है। जिस घर/परिवार में वात्सल्य व न्याय-नीति का पालन किया जाता हो उस घर में राम-राज चल रहा है – ऐसा कहा जाता है, दो भाइयों के पारस्परिक स्नेह को देखकर राम-लक्ष्मण की जोड़ी कहा जाता है। देश में आज भी सुशासन के लिए 'रामराज आना चाहिए' का प्रयोग किया जाता है।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी

वैदिक परम्परानुसार भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि को रोहिणी नक्षत्र, जयन्ती योग में रात्रि 12.00 बजे श्रीकृष्ण का जन्म हुआ। इस दिन सम्पूर्ण विश्व में जन्माष्टमी पर्व बड़े धूम-धाम से मनाया जाता है। वे वसुदेव व देवकी की आठवीं संतान हैं। जिनका पालन-पोषण नंदलाल व माता यशोदा ने गोकुल में किया।

जैन धर्म के बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ आप के चचेरे भाई थे। आप ने कंस-जरासंध आदि द्वारा किये जा रहे अत्याचारों से प्रजा को छुटकारा दिलाया एवं लोगों को सन्मार्ग पर चलने तथा कर्तव्य पालन की शिक्षा दी।

श्री महावीर जयन्ती

अहिंसा के अवतार, सर्वोदयी संदेश देने वाले, सभी आत्माओं को समान कहने वाले; 'मनुष्य जन्म से नहीं कर्म से महान बनता है', 'एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ता-धर्ता-हर्ता नहीं है', 'प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है' - इस प्रकार की शिक्षाएँ देने वाले जैन धर्म के अंतिम (चौबीसवें) तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदशी (सोमवार 27 मार्च 598 ईसा पूर्व) के मांगलिक प्रभात में गणनायक सिद्धार्थ की महारानी प्रियकारिणी त्रिशला के गर्भ से वैशाली के कुण्डग्राम बिहार में हुआ था।

उनकी शिक्षाओं को विश्व शान्ति के लिए प्रचारित-प्रसारित करने हेतु चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती का आयोजन उत्साह पूर्वक किया जाता है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. श्रीराम के पिता का क्या नाम था?
   (क) महावीर (ख) दशरथ
   (ग) जनक (घ) कृष्ण
2. श्रीकृष्ण के पिता कौन थे?
   (क) वासुदेव (ख) नन्दलाल
   (ग) दशरथ (घ) जनक
3. श्री महावीरस्वामी के पिता कौन थे?
   (क) दशरथ (ख) वासुदेव
   (ग) सिद्धार्थ (घ) जनक

प्रश्न 2 – मिलान कीजिए –

1.	राम	क.	बालकाण्ड
2.	कृष्ण	ख.	यशोदा
3.	महावीर	ग.	कौशल्या
4.	नन्दलाल	घ.	देवकी
5.	रामायण	ङ.	त्रिशला

प्रश्न 3 – लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. भगवान महावीर का जन्म कहाँ हुआ?
2. श्रीकृष्ण का जन्म कब हुआ?
3. श्रीराम का जन्म किन तीर्थंकर के काल में हुआ था?
4. श्रीकृष्ण वासुदेव की कौनसी संतान थे?

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

आपको पता है जयन्ती किसकी मनाई जाती है, आप और आपके धर्म में अन्य किन-किन महापुरुषों की जन्म-जयन्तियाँ मनाई जाती हैं – लिखिए।

7 हमारे तीर्थ : अयोध्या

भारत में हिन्दू धर्म के सात पवित्र तीर्थ स्थल अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, काशी, कांची, अवंतिका और द्वारका प्रसिद्ध हैं। सरयू नदी तट पर बसा कौशल राज का यह नगर अयोध्या जहाँ इक्ष्वाकु वंश में राजा दिलीप, रघु, दशरथ इत्यादि का जन्म हुआ। राजा दशरथ के चार पुत्रों में से बड़े पुत्र श्रीराम के जन्म के कारण यह नगरी विश्व प्रसिद्ध है। वाल्मीकि कृत रामायण के अनुसार अयोध्या बारह योजन लंबी व तीन योजन चौड़ी थी।

जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक काल खंड में होने वाले चौबीस तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या में ही होता है। यह तीर्थंकरों की शाश्वत जन्मभूमि है।

वर्तमान काल के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म भी अयोध्या में ही हुआ। ऋषभदेव को प्रथम तीर्थंकर होने के कारण आदिनाथ भी कहा जाता है। आपके पिता राजा नाभिराय एवं माता मरुदेवी थीं। वर्तमान के चौबीस तीर्थंकरों में से पाँच तीर्थंकरों का जन्म अयोध्या में ही हुआ है।

इस तरह हिंदू व जैन धर्मावलंबियों के लिए अयोध्या एक पवित्र तीर्थ के रूप में जाना जाता है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सुमेल कीजिए –

1.	अयोध्या	क.	24
2.	राम	ख.	नाभिराय
3.	तीर्थंकर	ग.	वाल्मीकि
4.	ऋषभदेव	घ.	दशरथ
5.	रामायण	ङ.	सरयू

प्रश्न 2 – रिक्त स्थानों की पूर्ति करो –

1. हिन्दू धर्म के भारत में .... पवित्र तीर्थ स्थल हैं। (सात/आठ)
2. अयोध्या .... राजा का नगर कहलाता है। (कौशल/पोरस)
3. जैनधर्म के 24 तीर्थंकरों का जन्म .... में होता है। (वाराणसी/अयोध्या)
4. ऋषभदेव को प्रथम तीर्थंकर होने के कारण .... भी कहा जाता है। (आदिनाथ/ऋषभदेव)

प्रश्न 3 – लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. जैसा कि आपने अयोध्या के बारे में पाठ में विशेष पढ़ा इसी तरह अन्य 6 तीर्थों के बारे में जानकारी एकत्र करिए।
2. क्या आप इन सभी तीर्थों के दर्शन करने अपने अभिभावकों के साथ गए हैं। यदि हाँ तो वहाँ के अनुभव कक्षा में सुनाएँ। यदि नहीं तो जल्द ही दर्शन को जाने की तैयारी करें।

8 कविताएँ

अच्छे बच्चे

प्यारे बच्चे अच्छे बच्चे।
श्रद्धा के नहीं होते कच्चे।।
किसी की बातों में नहीं आते।
अपनी बुद्धि सदा लगाते।।

अंधविश्वास कभी नहिं करते।
छोटा-सा भी नियम न तजते।।
बड़े जनों का आदर करते।
अपना काम आप ही करते।।
नहीं किसी का चित्त दुखाते।
झूठी बातें नहीं बनाते।।
लख कर कोई वस्तु किसी की।
नहीं ललचाते नहीं चुराते।।
शीलवान संतोषी रहते।
जीवन में वे आदर पाते।।

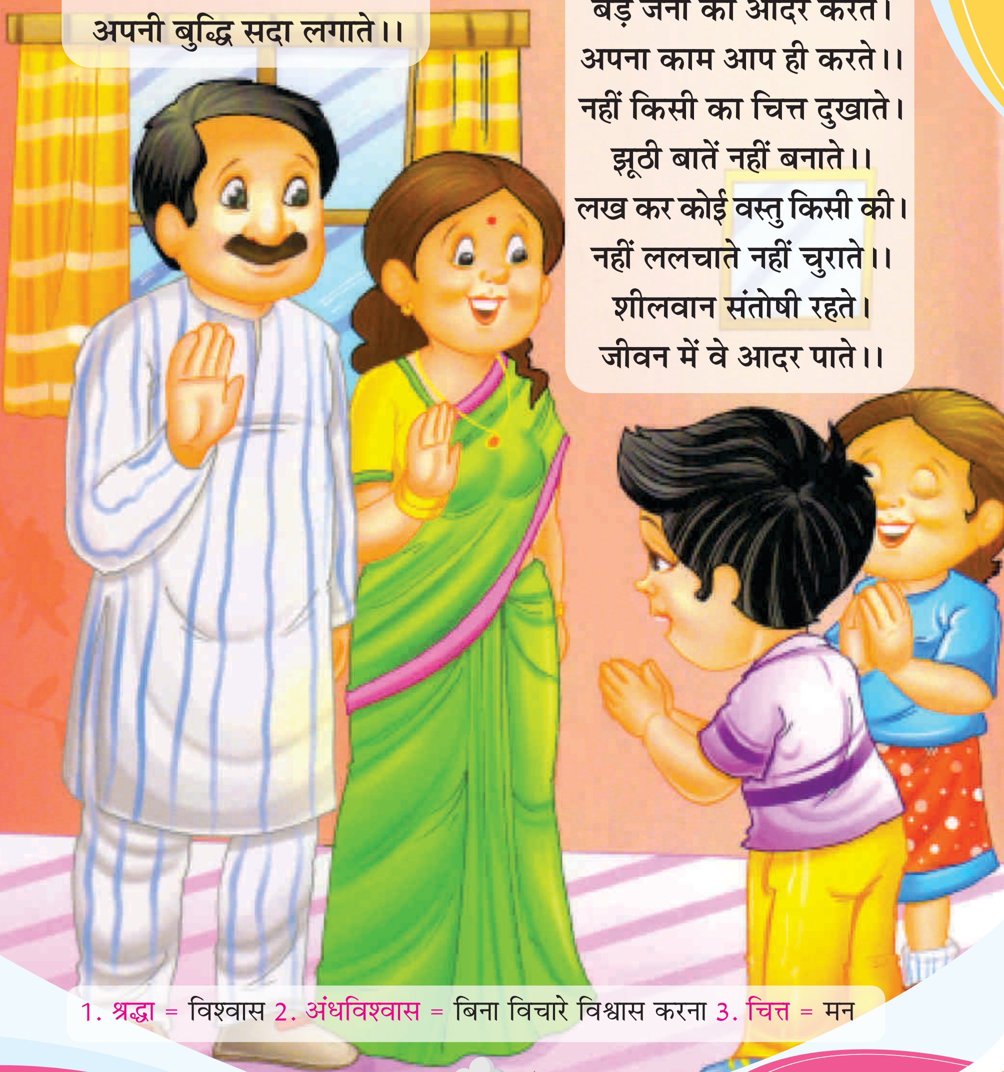

1. श्रद्धा = विश्वास 2. अंधविश्वास = बिना विचारे विश्वास करना 3. चित्त = मन

उन्नति

भोर हुआ अब आँखें खोलो, नाम प्रभु का मुख से बोलो।
बड़े जनों से अभिवादन कर, छोटों से स्नेह से बोलो।।
पानी, दूध, सफाई देखो, सहयोगी सब ही के हो लो।
शौच और मंजन नित करना, फिर स्नान से निवृत्त हो लो।।
गुस्सा जिद्द कभी नहीं करना, हित-मित मीठे वचन सु बोलो।
फिर उत्साह से बैठो थिर हो, होमवर्क स्कूल का कर लो।।
आगे रहो पढ़ाई में भी, सब ही के मन के प्रिय हो लो।
दुःखीजनों की सेवा करना, उनका भी शुभ आशिष ले लो।।
धोखा किसी को कभी न देना, झूठ कभी नहीं मुख से बोलो।
शील पालना संतोषी हो, झूठी तृष्णा से मुख मोड़ो।।
करो दिखावा कभी न झूठा, अरे रूढ़ियों को तुम तोड़ो।
सच्चे देश भक्त हो बच्चो! द्वार उन्नति का अब खोलो।।

1. निवृत्त = 2. जिद्द = हठ 3. थिर = स्थिर 4. तृष्णा = असीमित इच्छायें 5. रूढ़ियों = बिना विवेक की क्रियाएँ

अंगों की सार्थकता

आँखों से –

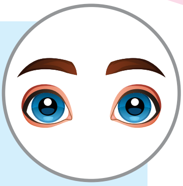

भक्ति से भगवान को देखूँ, आदर से गुरुओं को देखूँ।
छोटों को स्नेह से देखूँ, दुखियों को करुणा से देखूँ।।
पर वस्तु को पर ही देखूँ, लड़कों को भाई सम देखूँ।
हर लड़की को बहन बराबर, बुरे भाव से कभी न देखूँ।।
बैठ कभी अन्तर में देखूँ, अपने परमातम को देखूँ।।

मुख से –

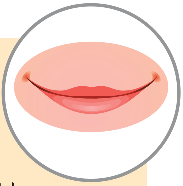

सच्ची प्यारी बात कहूँगा, निन्दा चुगली नहीं करूँगा।।
नहीं किसी की हँसी उड़ाऊँ, सुन्दर गीत भजन में गाऊँ।।
आदर और विनय से बोलूँ, सोच समझ अपना मुख खोलूँ।।

कान से –

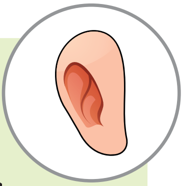

गन्दी बातें नहीं सुनूँगा, निन्दा, चुगली नहीं सुनूँगा।
सदा बड़ों की बात सुनूँगा, दुखियों की पुकार सुनूँगा।
गुरुओं का उपदेश सुनूँगा, अवसर पर ललकार सुनूँगा।
अच्छे-अच्छे काम करूँगा, नहीं कभी फटकार सुनूँगा।

पैरों से –

धर्म कार्य में दौड़ा जाऊँ, सेवा करने दौड़ा जाऊँ।
बड़े पुकारें जल्दी जाऊँ, दु:खी पुकारें जल्दी जाऊँ।
नहीं किसी को ठोकर मारूँ, नहीं चलूँगा टेढ़ी चाल।
कोई प्राणी दु:ख न पाये, पाँव रखूँगा सदा संभाल।

जल

जल से ही जीवन चलता है।
जल सब मैल दूर करता है।।

जल से ही खेती है होती।
उससे ही समृद्धि होती।।
जल सब ही की प्यास बुझाता।
उपयोगी कामों में आता।।

सदा छानकर पियो सु पानी।
व्यर्थ बहाओ कभी न पानी।।
गंदा भी तुम करो न पानी।
यदि चाहो सुखमय जिंदगानी।।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सही जोड़ी बनाओ –

1.	गंदी बातें	क.	भगवान को देखूँ
2.	झूठी तृष्णा से	ख.	नहीं ललचाते
3.	मुख से	ग.	मुख मोड़ो
4.	अच्छे बच्चे	घ.	नहीं सूनूँगा
5.	भक्ति से	ङ.	भजन गाऊँगा

प्रश्न 2 – अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अच्छे बच्चे किसके कच्चे नहीं होते हैं?
2. हमें सुबह उठते ही क्या करना चाहिए?
3. हमें आँखों से किस प्रकार देखना चाहिए?
4. हमें पानी को कैसा नहीं करना चाहिए?
5. हम सबके मन के प्रिय कैसे हो सकते हैं?

प्रश्न 3 – रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1. जल सब ही की .... बुझाता। (आस/प्यास)
2. नहीं किसी की .... उड़ाऊँ। (हँसी/मजाक)
3. बड़े जनों से .... कर। (अभिवादन/अभिनंदन)
4. लख कर कोई .... किसी की। (वस्तु/पुस्तक)
5. धोखा किसी को .... न देना। (कभी/अभी)

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

1. आप इन कविताओं को अपने अध्यापक की सहायता से गायें।
2. निम्न विषयों पर अन्य कविताओं को खोजकर अपनी कक्षा में सुनाएँ – जल, देश, धर्म, अच्छा बच्चा, विनय, हठ, सफलता, माता–पिता।

९ सदाचार

अतिथि सत्कार

1. अतिथि के आने पर मुद्रा एवं वचनों से हर्ष प्रगट करें। बड़ों को योग्य अभिवादन कर खड़े हों और उनका सामान आदि लेकर रखवाएँ।
2. समय अनुसार स्नान, भोजन, जलपान, औषधि, विश्राम आदि की उचित व्यवस्था करें।
3. कार्य में सहयोग की व्यवस्था करें।
4. मन में कोई भार या दुर्भाव न आने दें। शिष्ट वचनों में अपनी उलझन या असमर्थता हो तो कह दें। कपट पूर्वक ऊपर-ऊपर से शिष्टाचार मात्र ही नहीं करते रहें।
5. सहज व्यवहार करें।
6. उनके वात्सल्य को भी सहजता से स्वीकार करें।
7. परिस्थिति के अनुसार उन्हें अल्प या अधिक समय अवश्य दें।
8. योग्य रीति से विदाई दें।

सॉरी दादाजी...

"दिन भर सफाई करते रहो, इन बच्चों के कारण सारा समय घर के ही काम में निकल जाता है। लेकिन ये बच्चे भी न बिल्कुल बात नहीं मानते।"

"क्या हुआ मम्मी! हम आपकी कौनसी बात नहीं मानते?"

"विभु! तुम अपनी कॉपी के कितने पेज फाड़ते हो। रोज कचरे में इतने सारे पेज पड़े हुए मिलते हैं।"

"अरे मम्मी! कुछ गलत हो जाता है तो पेज फाड़ना ही पड़ता है और मम्मी! क्या फर्क पड़ता है? अपने पास तो ढेर सारी कॉपियाँ रखी हैं। आप भी छोटी-छोटी सी बात पर दु:खी होती हो।"

"विभु! तुम दसवीं कक्षा में आकर भी बचपने की बात करते हो। हम तुम्हारी पढ़ाई की सारी व्यवस्था करते हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि तुम अपनी गलत बात को भी सही सिद्ध करो।"

"इसमें गलत बात क्या है मम्मी! आप तो ऐसे कह रही हो जैसे कोई पाप कर दिया हो....।"

"हाँ! पाप ही किया है बेटा!" दादाजी विभु को टोकते हुए बोले।

"क्या दादाजी! आप भी मम्मी की तरफ ही बोल रहे हैं!"

"बात किसी की तरफ की नहीं है विभु! बात सच की है और तुमने दो पाप किये हैं।"

"मैं समझा नहीं दादाजी! जरा बताइये कैसे?"

"पहली बात – तुम्हें अपनी मम्मी से गलत तरीके से बात नहीं करनी चाहिए। यदि कोई बात समझ में नहीं आ रही हो तो उसे विनयपूर्वक भी कह सकते थे। कोई भी माँ अपनी संतान को गलत बात नहीं सिखाती।

दूसरी बात – अनावश्यक कागज फेंकना और फाड़ना पाप ही तो है।

यदि पहले ही सावधानी रखी जाये तो पेपर फाड़ने का अवसर ही नहीं आयेगा।''

''लेकिन ये पाप कैसे हुआ? दादाजी!''

''तुम तो जानते ही हो कि पेपर कैसे बनता है। यदि नहीं पता हो तो इंटरनेट पर यू–ट्यूब पर देख सकते हो। पेड़ों को काटकर उसे गलाकर बहुत लम्बी प्रक्रिया के बाद पेपर बनता है। हम जितना पेपर उपयोग करेंगे उतने ही ज्यादा पेड़ों को काटकर पेपर का उत्पादन किया जायेगा। आखिर पेड़ काटना भी तो हिंसा है। हमें परोक्ष रूप से उस हिंसा का पाप लगेगा ही।''

''तो क्या पुस्तक छपाना, कॉपी बनाना बन्द कर दें, फिर पढ़ाई और दूसरे काम कैसे होंगे?'' विभु ने हाथ मटकाते हुए कहा।

''विभु! पढ़ना–लिखना हमारे जीवन का आवश्यक कार्य है। इसलिए इसका छपना तो बन्द नहीं हो सकता लेकिन हम इतना तो कर ही सकते हैं कि इसके दुरुपयोग को रोकें। अनावश्यक पेपर बरबाद न करें। एक ओर प्रिन्ट किये पेपर को दूसरी ओर भी प्रयोग करें'' – दादाजी ने सिर पर हाथ रखकर समझाया।

''बात तो आपकी सही है दादाजी!''

''बेटा! गृहस्थ अवस्था में पाप तो होते ही हैं, परन्तु हम जितने पापों और अनावश्यक क्रियाओं से बच सकें उतना प्रयास हमें करना चाहिए और बड़ों का सम्मान तो तुम कर ही सकते हो ना।''

''सॉरी दादाजी! अब आगे से मैं सबसे सम्मान से बात करूँगा और अनावश्यक पेपर बरबाद भी नहीं करूँगा।'' – विभु कान पकड़ कर बोला।

सॉरी मुझे नहीं.....अपनी मम्मी को बोलो।

सॉरी मम्मी।

ओके बेटा! और थैंक्स। तुमने दादाजी की बात का सम्मान रखा।

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – सही या गलत की पहचान करिए –

1. मम्मी से गलत तरीके से बात करना पाप नहीं है।
2. हमारा व्यवहार सहज होना चाहिए।
3. हमें मात्र अपने घर के बड़ों का सत्कार करना चाहिए।
4. अनावश्यक पेपर बरबाद नहीं करना चाहिए।
5. पेड़ काटना हिंसा है।

प्रश्न 2 – लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. अतिथि सत्कार किस प्रकार करना चाहिए?
2. विभु ने कौनसी गलतियाँ की थीं?
3. अतिथियों की विदाई कैसे करनी चाहिए?

प्रश्न 3 – सही जोड़ी बनाओ –

1.	व्यवहार	क.	सहयोग
2.	पाप	ख.	पाप
3.	कार्य में	ग.	अभिवादन
4.	पेपर फाड़ना	घ.	हिंसा
5.	अतिथि	ङ.	सहज

10 जीवन निहारें-जीवन निखारें

आत्मनिरीक्षक बनें

''यदि पौधे को निरंतर पानी डालते रहे, तो कुछ समय पश्चात् सुंदर सुमनों से सुशोभित होता है; उसी प्रकार आपके द्वारा किए जाने वाले सत्कार्य भविष्य में अच्छे फल ही देते हैं।''

"If the plant is watered regularly, after some time it will be decorated with beautiful flowers; same way the good works done by you give you good results in future." – अज्ञात

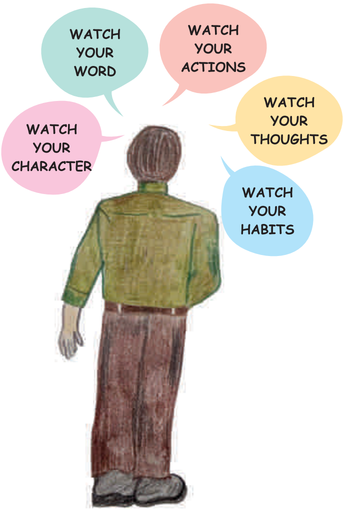

हर व्यक्ति की अपनी एक अलग पहचान होती है, वह पहचान ही उसका व्यक्तित्व कहलाती है।

व्यक्तित्व एक तो शारीरिक संरचना के आधार पर होता है, जो प्रकृतिदत्त है – गौर वर्ण, लंबा-चौड़ा शरीर, प्रभावक मुद्रा, बड़ी व सुंदर आँखें इत्यादि। और दूसरा वैचारिक व्यक्तित्व है; यह प्रकृतिदत्त भी हो सकता है – जैसे कि कोई गुस्सैल है, कोई स्वभाव से ही ईमानदार, परिश्रमी, सहयोगी या प्रसन्नचित्त रहनेवाला है।

इन दोनों ही व्यक्तित्व को हम बहिरंग और अंतरंग व्यक्तित्व भी कह सकते हैं। ये दोनों ही प्रकृतिदत्त भी हैं, पर इनमें हम कुछ परिमार्जन करके भी अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बना सकते हैं।

जैसे कि बहिरंग व्यक्तित्व में जो हमें चेहरा मिला है, उसमें बदलाव नहीं कर सकते; परंतु हम अपने चेहरे को स्वच्छ रखकर, बालों कोसंभाल कर, अच्छे कपड़े पहन कर अपने व्यक्तित्व को आकर्षक बना सकते हैं।

इसी तरह हम अंतरंग व्यक्तित्व को भी सत्साहित्य पढ़कर, अच्छी आदतों को अपनाकर आकर्षक बना सकते हैं। हम जो भी यहाँ चर्चा करेंगे वह अपने जीवन अर्थात् व्यक्तित्व को स्वयं निहार कर, उसमें जो परिमार्जन किया जा सकता है, उसकी ही चर्चा करेंगे।

हम सबसे पहले अपने जीवन को निहारने के लिए एक 'वॉचमैन' बनें। वॉचमैन जिस बंगले, मंदिर या फैक्ट्री में कार्य करता है, वहाँ चारों ओर से उस स्थान को वॉच करते हुए/देखते हुए उसकी सुरक्षा करता है, उसका ध्यान रखता है।

इसी प्रकार हम अपने जीवन को वॉच करें, अच्छी तरह से देखें और कहाँ त्रुटि हो रही है? कहाँ चूक हो रही है? जिससे कि लोग हमें पसंद नहीं करते हैं, लोग मजाक बनाते हैं यह समझ कर हम उन दोषों को दूर करने का प्रयास करें तो अवश्य ही जीवन निखरेगा।

Watch शब्द में 5 अक्षर हैं W A T C H इन पाँचों ही अक्षरों के अनुसार हम यहाँ पर कुछ समझेंगे; सबसे पहले –

1. 'W' - Watch your 'word'

हम अपने शब्दों को देखें। हम जो बोलते हैं, जिन शब्दों का प्रयोग करते हैं, क्या वे शब्द जिससे संवाद किया जा रहा है, उसके योग्य हैं? जब बोलना चाहिए तब बोल रहे हैं? जो बोलना चाहिए वह बोल रहे हैं? यदि हम इसका निरीक्षण करेंगे तो पायेंगे कि हम अनेक बार जब बोलना चाहिए, तब नहीं बोलते, बल्कि जब, जैसी मर्जी होती है, तब बोल जाते हैं और वह बोलना ही हमारे विवाद/विसंवाद, अपमान और क्लेश का कारण बन जाता है।

हम योग्य व्यक्ति के साथ योग्य शब्दों का प्रयोग नहीं करते, तू-तड़ाक कर बोलते हैं, गाली-गलौज करके बोलते हैं। अनेक तकिया-कलाम

जैसे – क्या?, समझ में आया!, समझे कि नहीं! मतलब, बट, एंड इत्यादि शब्द बीच–बीच में बोलकर हँसी के पात्र बनते रहते हैं। इसलिए हम अपने शब्दों को अच्छी तरह से देखें और फिर जो दोष दिखाई दें उनका परिमार्जन करें।

2. 'A' - Watch your 'actions'

चलते, फिरते, बोलते, घूमते, मंदिर में पूजन करते, स्वाध्याय करते, अनजाने ही हम कुछ इस प्रकार के एक्शन करते हैं, चलते हैं, हाथ घुमाते हैं अथवा गर्दन मटकाते हैं, जिसको देखकर लोग हमसे दूरी बनाए रखते हैं, हमारा मजाक बनाते हैं इसलिए हम अपने 'एक्शन' का निरीक्षण करें कि हम बोलते समय अनावश्यकरूप से हाथ तो नहीं हिलाते, कोई बात समाप्त होते ही ताली मारने के लिए हाथ आगे तो नहीं बढ़ाते, बोलते–बोलते जीभ बाहर तो नहीं निकालते, बोलते समय हमारा थूक बाहर तो नहीं निकलता, हम अनावश्यक ही खिलखिला करके तो नहीं हँसते, हम सभा में देर से पहुँच करके भी हिलते–डुलते सबसे आगे जाकर के तो नहीं बैठते, हम सभा में कोई हास्य की बात आने पर या कोई प्रसंग बनने पर पीछे मुड़–मुड़कर के तो नहीं देखते?इत्यादि।

हम अपने एक्शन को देखेंगे, विचार करेंगे तो लगेगा कि मैं सहीनहीं कर रहा हूँ और हम सुधार करके अपने व्यक्तित्व को निखार सकते हैं।

3. 'T' - Watch your 'thoughts'

'अयं निजः परोऽवेति' की भावना/स्वार्थवृत्ति हमें आगे नहीं बढ़ने देगी, प्रशंसनीय नहीं बनने देगी। आपने सुना भी होगा 'छोटी सोच और पैर की मोच' आगे नहीं बढ़ने देती। हम एकांत में बैठकर अपने दिन भर में चलने वाले विचारों का विश्लेषण करें –

- हम जहाँ काम करते हैं, वहाँ हम किस बात को लेकर किसी से नाराज होते हैं?

- क्या किसी की उन्नति को देखकर हम सच में प्रसन्न होते हैं?
- क्या किसी के दोष देखकर हम उसके वे दोष दूर करना चाहते हैं? या दोष दूसरों को बता कर उसका अपमान करना चाहते हैं?
- क्या हम जाति-पाँति का भेदभाव अपने मन में पालकर चलतेहैं?
- क्या हम अपने परिवार के अलावा अन्य किसी के बालक-बालिकाओं को आगे बढ़ते देखना चाहते हैं या नहीं देखना चाहते हैं?
- क्या व्यापार में हम कैसे भी पैसा कमाना चाहते हैं?
- क्या हम जो भी कार्य करते हैं] उसका यश केवल अपने लिए ही लेना चाहते हैं? क्या हम मात्र यश लेना चाहते हैं? काम नहीं करना चाहते हैं?
- क्या हम किसी संगठन में जुड़कर अपने आपको ही हाईलाइट करना चाहते हैं?

हमारी यदि ऐसी भावनाएँ हैं तो कोई भी हमारा नेतृत्व स्वीकार नहीं करेगा और इतना ही नहीं वह अपने नेतृत्व में भी हमें रखने के लिए तैयार नहीं होगा; इसलिए इन दोष पूर्ण विचारों/छोटी सोच को अपने मस्तिष्क, हृदय से बाहर करके व्यक्तित्व को चमकाया जा सकता है।

4. 'C' - Watch your 'character'

हम अपने चरित्र को देखें। हमारा आचरण-हमारा खानपान, बोलचाल का तरीका, व्यापार या काम करने का तरीका कैसा है? यदि आप पुरुष हैं तो माता-बहनों के प्रति और आप यदि महिला हैं तो परपुरुषों के प्रति आपका भेदभावपूर्ण व्यवहार, आपका अनपेक्षित आकर्षण और स्वार्थी/ लालची वृत्ति यह सब आचरण प्रशंसनीय नहीं हैं। यदि आप अपने आचरण को निहारेंगे तो जीवन को निखारेंगे। हमारा सदाचरण/शील हमारा श्रृंगार है, वही हमें सुन्दर और आकर्षक बनाता है।

इसी को हम दूसरे प्रकार से भी कह सकते हैं 'Watch your capability' आप अपनी क्षमता को देखें। कई बार हम क्षमता न होते हुए भी जिम्मेदारियाँ ले लेते हैं और उन्हें निभा नहीं पाते तो अपमानित होते हैं और कई बार हम अपनी क्षमता से कम जिम्मेदारियाँ लेते हैं, तब भी हम लोगों के बीच में प्रत्यक्ष या परोक्ष हँसी के पात्र होते हैं। चाहे वह क्षमता तन की हो या धन की, हम अपनी क्षमता को पहचान कर ही कार्य करें तो, कभी भी हम तनाव में जीवन नहीं जियेंगे, बदनामी जीवन में नहीं आएगी। हम अपनी क्षमता को जानकर तदनुसार यदि प्रवर्तन करेंगे तो निश्चित ही हमारा व्यक्तित्व निखरेगा।

5. 'H' - Watch your 'habits'

हम अपनी आदतें पहचानें। हमें अपनी बोलने, चलने की आदत अच्छी तरह से देखना चाहिए। कुछ लोगों को बात-बात पर झूठ बोलने की आदत होती है, वादा करके भूलने की आदत होती है, हमेशा ही देर से आने की आदत होती है, किसी से कोई चीज लेकर बिना याद कराये वापस नहीं देने की आदत होती है, हर किसी से हर वस्तु माँगने की आदत होती है, सभी के बीच में अन्य किसी का ध्यान रखे बिना अकेले ही खाने की आदत होती है, दूसरों से मिल-बाँट करके नहीं खाने व साथ में नहीं चलने की आदत होती है। यदि हमको लगता है कि सच में इन आदतों वाला कोई हमारे सामने हो तो हम पसंद नहीं करेंगे तो हम अपनी आदतों को बदलने का प्रयास करें, हमारा जीवन अवश्य ही निखरेगा।

जिसतरह एक watchman मंदिर, घर की पूरी तरह निगरानी करते हुए जहाँ से भी कोई खतरा है, उस खतरे के द्वार को बंद कर सुरक्षित रखता है, उसी तरह हम अपने जीवन के 'वॉचमैन' बनें। अपने शब्द, चेष्टा, विचार, चरित्र और क्षमता और आदतों का निरीक्षण करते हुए उनमें परिमार्जन करें तो हमारा जीवन/व्यक्तित्व बहुत ही आकर्षकबनेगा।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1. .... हमारे विवाद अपमान और क्लेश का कारण बन जाता है।
2. सुधार करके हम अपने .... को निखार सकते हैं।
3. हम अपने जीवन के .... बनें।
4. छोटी सोच को अपने मस्तिष्क हृदय से बाहर करके अपने व्यक्तित्व को .... जा सकता है।
5. व्यक्ति की पहचान ही उसका .... कहलाती है।

प्रश्न 2 – अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. व्यक्तित्व क्या कहलाता है?
2. व्यक्तित्व के कितने भेद हैं? नाम बताइये।
3. व्यक्तित्व किसके द्वारा प्रदत्त है?
4. हमें अपने जीवन को निहारने के लिए क्या बनना होगा?

प्रश्न 3 – मिलान कीजिए –

1.	W	क.	THOUGHTS
2.	A	ख.	CHARACTER
3.	T	ग.	WORD
4.	C	घ.	HABITS
5.	H	ङ.	ACTION

प्रश्न 4 – लघुत्तरात्मक प्रश्न –

1. ACTION का क्या अर्थ है?
2. CHARACTER का अर्थ बताइये।

प्रश्न 5 – पाठ से आगे –

जैसा आपने Watch शब्द का एक विशेष अर्थ पढ़ा इसी प्रकार अन्य अंग्रेजी के शब्दों के अर्थ निकालिए और चर्चा करिए जैसे – IMPOSSIBLE

11 शिक्षाप्रद कहानियाँ

कपट की खुल जाती है पोल

बहुत पुरानी बात है – कुमुदावती नाम की नगरी में मर्यादापालक राजा श्रीवर्द्धन राज करते थे। उनके वह्निशिख नाम का एक सेवक था। वह सेवक राज्य में ईमानदार एवं सत्यवादी व्यक्ति के रूप में प्रसिद्ध था; किन्तु हृदय से वह अत्यन्त दुष्ट, झूठा एवं बेईमान था। वह छिपकर अन्याय, अनाचार आदि खोटे कार्य किया करता था। उसकी वास्तविकता किसी को पता न थी।

वह्निशिख को सत्यवादी समझकर एक बार नियमदत्त नामक बनिये ने अपनी कुछ सोने की मुद्राएँ उसके पास धरोहर के रूप में सुरक्षित रखवाईं।

कुछ समय बाद जब नियमदत्त को धन की आवश्यकता हुई तो उसने वह्निशिख से अपनी स्वर्णमुद्राएँ वापस माँगी। वह्निशिख के मन में तो लोभ था ही। उसने बेईमानी और कुटिलता से नियमदत्त को स्पष्ट मना कर दिया कि "मेरे पास तुम्हारा कोई धन नहीं है। तुमने मेरे पास धन रखा ही कब था?"

नियमदत्त यह सुनकर अवाक् रह गया। वह बहुत दु:खी हुआ। बहुत कठिनाई से वह ये कुछ स्वर्ण मुद्राएँ जोड़ पाया था और यह वह्निशिख उन्हें भी हड़पना चाहता है। ओफ! कहाँ जाऊँ? क्या करूँ? राजा से जाकर विनती करूँ?

पर वह्निशिख को सब लोग सत्यवादी और ईमानदार समझते हैं, तब राजा मेरी बात पर विश्वास कैसे करेंगे? बहुत सोच-विचार कर उसने निर्णय किया कि एक बार राजा से कहकर तो देखूँ!

उस समय राजा सच्चे अर्थों में प्रजापालक होते थे। वे प्रजा के दु:ख का पूरा ध्यान रखते थे। प्रजा नि:संकोच, बेरोक-टोक राजा से भेंट कर सकती थी, अपने सुख-दु:ख का हाल उन्हें सुना सकती थी। नियमदत्त ने भी राजा श्रीवर्द्धन की शरण ली और अपनी व्यथा कह सुनाई।

राजा ने सारी बात ध्यान से सुनी। कुछ दिनों से उन्हें भी वह्निशिख के आचरण के प्रति शंका हो रही थी। उन्होंने नियमदत्त को धैर्य बंधाया और शीघ्र ही उसे न्याय दिलवाने और उसका दु:ख दूर करने का विश्वास दिलाया।

अब राजा श्रीवर्द्धन चिन्तित था कि कैसे सत्य का पता लगाया जाय? यदि नियमदत्त सही कहता है तो वह्निशिख से उसका धन किस प्रकार वापस लिया जाय?

उन्होंने अपनी रानी से सलाह ली। उस समय स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी विदुषी व राज-काज में भी कुशल होती थीं। समय आने पर वे राजकार्य में उचित सलाह भी देती थीं। रानी ने पूरी घटना पर गंभीरता से विचार किया और राजा को एक उपाय सुझाया। राजा उस उपाय से सहमत हो गये।

परस्पर विचार-विमर्श कर संध्या समय रानी ने वह्निशिख को राजमहल बुलवाया। कुछ देर औपचारिक बातचीत करने के बाद रानी ने उससे चौपड़ खेलने का आग्रह किया और कहा कि आज मैं शर्त के साथ चौपड़ खेलना चाहती हूँ। वह्निशिख ने रानी का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार कर लिया, रानी की आज्ञा वह कैसे अस्वीकार कर सकता था? तब रानी ने कहा – "यदि तुम हार गये तो मैं तुम्हारी

अंगूठी ले लूँगी और यदि मैं हार जाऊँगी तो मेरी अंगूठी तुम्हें दे दूँगी।'' वह्निशिख ने शर्त स्वीकार कर ली।

बाजी बिछ गई खेल प्रारंभ हुआ। रानी बड़े ध्यान व सतर्कता से खेलने लगी। संयोग से कुछ ही देर में उन्होंने वह्निशिख से एक बाजी जीत ली। वह्निशिख हार गया। शर्त के अनुसार उसे अँगूठी देनी पड़ी। रानी ने दूसरी बाजी बिछाने के पूर्व वह अँगूठी अपनी दासी को दी और उसे सारी घटना बताकर वह्निशिख के घर उसकी पत्नी से वह अँगूठी निशानी के बताकर नियमदत्त का धन वापस लाने के लिए भेज दिया। वह्निशिख सारी योजना से अनजान था।

दूसरी बाजी बिछ गई। इसी बीच दासी वह्निशिख के घर गई और उसकी पत्नी को वह अँगूठी दिखाकर बोली तुम्हारे पति राजमहल में बैठे हैं। किसी काम में व्यस्त हैं, स्वयं नहीं आ सकते इसलिए निशानी के रूप में अपनी यह अँगूठी दी है और नियमदत्त की स्वर्ण मुद्राओं की थैली ले आने के लिए मुझे भेजा है।

पति की अँगूठी देखकर वह्निशिख की पत्नी आश्वस्त हो गई। उसने दासी को स्वर्ण मुद्राओं की थैली लाकर दे दी।

दासी थैली लेकर राजमहल में लौट आई और आकर रानी को संकेत से अपनी सफलता का समाचार दे दिया। रानी की योजना पूरी हुई। उसने कुछ देर बाद खेल बन्द कर दिया।

राजा श्रीवर्द्धन ने नियमदत्त की परीक्षा लेकर उसकी स्वर्ण मुद्राएँ लौटा दीं और झूठे, बेईमान, पाखण्डी, कपटी वह्निशिख का सब धन छीनकर, उसका अपमान कर राज्य से निकाल दिया।

सच है, कपट की पोल कब तक छुपी रह सकती है? झूठ, बेईमानी और कपट से मनुष्य थोड़े समय तो धन-सम्पत्ति व अन्य भौतिक सामग्री पा सकता है पर अन्त में उसे बहुत अपमान, तिरस्कार, अपयश मिलता है और साथ में धन की हानि भी उठानी पड़ती है।

न्यायप्रियता

उन दिनों काशी नरेश महाराज विश्वेश्वरराय की न्यायप्रियता और उदारता की धूम थी। एक दिन दरबार लगते ही कुछ गरीब लोग काशी-नरेश के पास रोते हुए आये और कहा – 'अन्नदाता! हम गरीबों की गंगा तट की झोंपड़ियाँ जला दी गई हैं, हम बर्बाद हो गये हैं। कहाँ रहें, क्या खाएँ, क्या पहिनें? हमारा सर्वस्व जला कर राख कर दिया गया है।'

नरेश – 'भाइयो! ऐसा अधर्म कार्य किससे हुआ है?'

गरीब – 'गरीब नवाज! यह आपके महल से हुआ है।' नरेश (आश्चर्य से) – 'हैं, हमारे महल से! क्या यह सच है, दीवानजी?'

दीवान (धीमे स्वर में) – 'सच है दयानिधान।'

नरेश – 'तो पहले इन गरीबों को राज्य के खर्चे से झोंपड़ियाँ बनवा दो। उनका जो सामान जला है उसकी नुकसानी भी दो, हर एक को एक-एक कम्बल और आज का भोजन महल की ओर से दो, झोंपड़ियाँ शाम तक बन जानी चाहिये।' गरीब लोग नमस्कार कर चले गये। 'दीवानजी, अब मेरे सामने महल के वे दोषी लाये जायें जिनसे यह नीच कृत्य हुआ है।'

दीवानजी – 'महाराज!.......
महारानी को.....

नरेश – 'क्या महारानी से ऐसा कुकर्म हुआ है, कैसे?'

दीवानजी – ''महाराज! आज पर्व का दिन था। सूर्योदय के पूर्व महारानीजी गंगा मैया का पूजन-स्नान करने को गयी

थीं। स्नानान्तर ठंड से वे काँपने लगीं और बोलीं तुरन्त आग जलाओ। पास में जलाऊ वस्तु न मिलने से वे बोलीं, एक झोंपड़ी जला दो, उसमें सूखा घास और कुछ लकड़ियाँ ही तो हैं।' आज्ञानुसार उसके अन्दर सोने वालों को और सामान को हटाकर उसे जला दिया गया। महारानी ने तापा। वे स्वस्थ हुईं लेकिन हवा के झोंके से उनकी लपट दूसरे झोंपड़ों में भी चली गयी और इस तरह सब झोंपड़े जल कर राख हो गये।''

नरेश – ''दूसरे का घर जलाकर अपना हाथ सेंकना यह बहुत बड़ा अपराध है। महारानी के राजकीय आभूषण और वस्त्र उतार लिए जाएं और उन्हें एक नौकरानी के वस्त्र पहनाकर यहाँ दरबार में लाया जाए।''

नौकरानी के भेष में महारानी ने आते ही घुटने टेककर अभिवादन किया और सिर नीचे झुकाकर अपने अपराध के लिए क्षमा-याचना भी की। महाराज कड़ककर बोले – 'महारानी! आप दोषी हैं, न्याय सबके लिए एक समान है, अपराधी को दण्ड मिलना ही चाहिए, चाहे वह कोई भी हो।'

महारानी (विनय से) – 'आप न्यायावतार हैं, मुझसे अपराध जरूर हुआ है।'

महाराज – 'तो सुनो! आज से तुम महारानी नहीं, महल की नौकरानी रहोगी। जितनी तनख्वाह, भोजन, वस्त्र दूसरी सेविकाओं को मिलता है उतना ही तुम्हें मिलेगा। जितना खर्च राज्य का झोपड़ियाँ बनवाने में लगेगा उतना तुम्हारी तनख्वाह से हर माह वसूल कर लिया जाएगा तथा इस तरह पूरा वसूल होने पर तुम्हारी दण्डावधि पूरी मानी जाएगी।'

महारानी ने यह सुनकर अपने दोनों हाथों से मुँह को ढक लिया और सुबक-सुबक कर रोने लगीं।

दीवानजी और दरबारी गण ने महाराज से क्षमा करने की विनती की किन्तु न्यायप्रिय राजा टस से मस न हुए और बोले – 'न्याय की तुला सबके लिए एक है, क्या राजा क्या प्रजा?'

यह बात चारों ओर फैल गयी, साथ ही फैल गयी काशी नरेश की न्यायप्रियता की कीर्ति।

लोभ का फल

राजा अभयवाहन चम्पापुरी में राज्य करते थे। उनकी रानी का नाम पुण्डरिका था। इसी चम्पापुर नगर में लुब्धक सेठ अपनी सेठानी नागवसु और पुत्रों गरुड़दत्त और नागदत्त के साथ रहता था।

लुब्धक सेठ बहुत धनवान था पर बहुत कंजूस भी। उसे सोने के पशु-पक्षी बनवाकर रखने का बहुत शौक था। उसने बहुत धन खर्च करके बड़े आकार के पक्षी, हाथी, ऊँट, घोड़ा, सिंह आदि अनेक पशुओं की जोड़ी सोने से बनवाकर अपने घर के एक कमरे में सजाकर रखी थीं। जो कोई भी इस प्रदर्शनी को देखता वह लुब्धक सेठ की बहुत प्रशंसा करता था। लुब्धक भी अपनी प्रशंसा सुनकर बहुत प्रसन्न होता था। वह एक बैल की जोड़ी बना रहा था। उसने एक बैल तो बना लिया परन्तु दूसरे बैल के लिये उसके पास सोना समाप्त हो गया। उसे इस बात की बहुत चिन्ता हो गई कि सोना न होने से दूसरा

बैल कैसे बनेगा? वह इस कमी को पूरा करने का प्रयास करता रहता था और बहुत काम करता था।

एक बार सात दिन तक लगातार बारिश होने से नगर के सभी नदी-नाले तालाब भर गये। वह लुब्धक सेठ बारिश में स्वयं लकड़ियाँ लेने के लिये जंगल गया और सिर पर लकड़ियाँ लेकर वापस आ रहा था। उसी समय रानी पुण्डरिका राजा के साथ अपने महल में खिड़की के पास बैठकर सुहावने मौसम का आनंद ले रही थी उसने वहीं से लुब्धक को लकड़ी लाते हुये देखा तो उसे बहुत दया आई और उसने राजा से कहा कि प्राणनाथ! आपके राज्य में यह कोई बहुत निर्धन व्यक्ति है। देखिये, बारिश में भी लकड़ियों को अपने सिर पर लेकर जा रहा है। आप इस व्यक्ति की कुछ सहायता करें जिससे इसका दु:ख दूर हो सके।

राजा ने तुरन्त ही सेवकों से कहकर लुब्धक को बुलाया और कहा कि "तुम्हारे घर की हालत ठीक नहीं है, इसलिये तुम्हें जितने रुपयों की आवश्यकता हो उतने रुपये राजकोष से ले लो।"

इस पर लुब्धक ने कहा – "महाराज! मुझे कुछ नहीं चाहिये। मेरे पास एक बैल है बस मुझे तो उस बैल की जोड़ी के लिये बस एक बैल और चाहिये।"

राजा ने कहा "ठीक है हमारे पास सैकड़ों बैल है जो तुम्हें पसंद हो तुम एक बैल ले जा सकते हो।"

तब लुब्धक ने कहा कि – "महाराज! आपके बैलों में से एक भी बैल मेरे पास रखे बैल जैसा नहीं है।"

यह सुनकर राजा को आश्चर्य हुआ उसने पूछा कि "भाई! तुम्हारा बैल कैसा है? मैं तुम्हारे घर पर रखा बैल देखना चाहता हूँ।"

तब लुब्धक राजा को अपने घर ले गया। राजा लुब्धक के घर की

प्रदर्शनी और उसके वैभव को देखकर आचर्यचकित रह गया। उसने सोने का बैल भी देखा। राजा को अपने घर आया देखकर लुब्धक की पत्नी नागवसु बहुत प्रसन्न हुई। वह सोने की थाली को बहुमूल्य रत्नों से भरकर लाई और अपने पति को देते हुये कहा कि "यह थाली महाराज को भेंट दे दीजिये।"

रत्नों से भरा हुआ थाल देखकर लुब्धक को बहुत दु:ख हो रहा था, परन्तु महाराज के सामने वह अपनी पत्नी को मना भी नहीं कर सकता था। महाराज को थाल देते समय उसके हाथ थर-थर काँपने लगे। जैसे ही उसने महाराज को थाल देने के लिये हाथ आगे बढ़ाया महाराज को उसके हाथों की उंगलियाँ सांप के सिर के समान लगने लगीं। जिसने जीवन में किसी को एक पैसा भी दान न दिया हो वह अपने रत्न कैसे किसी को दे सकता था। राजा उसके मन के भाव को समझ गया और वह उसी समय उसके घर से अपने महल वापस आ गया।

लुब्धक धन कमाने के लिये सिंहल द्वीप गया। वहाँ उसने चार करोड़ का धन कमाया और जब वह धन कमाकर कर जहाज से वापस आ रहा था तब समुद्र में तूफान आ जाने से पूरा जहाज समुद्र में डूब गया और लुब्धक उसमें डूबकर मर गया। वह धन की चिंता और लोभ के फल में मरकर अपने घर में ही सर्प बन गया। वहाँ भी वह अपने धन के आसपास ही घूमता रहता था यदि कोई उस धन के पास भी आता था तो वह उसे डराकर भगा देता था। सर्प को धन के ऊपर बैठा हुआ देखकर लुब्धक के पुत्र गरुड़दत्त को बहुत क्रोध आया और उसने उस सर्प को मार डाला। वह सर्प मरकर नरक चला गया।

इस प्रकार जीव तीव्र लोभ-लालच आदि के फल में दुर्गतियों में भयंकर दुख भोगता है। इसलिये सुख प्राप्त करने के लिये क्रोध-मान-लोभ आदि से दूर रहकर अपने धर्म की आराधना करना चाहिये।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – रिक्त स्थानों की पूर्ति करिए –

1. महाराज विश्वेश्वराय की .... और .... की धूम थी।
2. झोपड़ियों को जलाने का आदेश .... ने दिया था।
3. कुमुदावली नगरी में .... सेवक रहता था।
4. लुब्धक के पास .... बैल थे।
   वह्निशिख और .... के द्वारा खेल खेला गया।
5. लुब्धक मरने के बाद .... बना।

प्रश्न 2 – अति लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. वह्निशिख को नियमदत्त ने धरोहर के रूप में क्या रखवाया था?
2. गरीबों की झोपड़ियाँ कहाँ थीं?
3. लुब्धक सेठ की पत्नी का नाम बताइए?
4. लुब्धक ने राजा को अपने घर में क्या दिखाया?
5. महाराज विश्वेश्वराय कहाँ के राजा थे?

प्रश्न 3 – नाम के साथ इसके पद से या विशेषता से मिलान करें –

1.	विश्वेश्वराय	क.	सेठ, कंजूस
2.	नागवसु	ख.	रानी, दयालु
3.	वह्निशिख	ग.	न्यायप्रियता, उदारता
4.	पुण्डरिका	घ.	सेठानी
5.	लुब्धक	ङ.	सेवक, सत्यवादी

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

1. लालच करने से क्या-क्या दुष्परिणाम होते हैं, विचार करो और लिखो।
2. क्या हमें किसी के साथ छल करना चाहिए? इस पर अपने विचार रखें क्योंकि छल करने से जानवर बन जाते हैं।
3. राजा राम की न्यायप्रियता जगत प्रसिद्ध है, उन्होंने क्या न्याय किया था, खोजकर लिखो।

12 सुभाषित : विनय

क्रोधमानादयो दोषा, छिद्यन्ते येन वैरदाः।
न वैरिणो विनीतस्य, तस्य सन्ति कथंचन।।

जिसके द्वारा बैर को देने वाले क्रोध, मान आदि दोष नष्ट किए जाते हैं, उस विनयवान मनुष्य के किसी तरह के बैरी नहीं होते।

ज्ञानलाभार्थमाचारविशुद्ध्यर्थं शिवार्थिभिः।
आराधनादिसंसिद्ध्यै कार्यं विनयभावनम्।।

कल्याण के इच्छुक मनुष्यों को ज्ञान प्राप्ति के लिए, आचार की शुद्धि के लिए तथा आराधना आदि की सिद्धि के लिए विनय की भावना करनी चाहिए।

विनश्यन्ति समस्तानि, व्रतानि विनयं विना।
सरोरुहाणि तिष्ठन्ति, सलिलेन विना कथम्।।

विनय के बिना समस्त व्रत नष्ट हो जाते हैं, सो ठीक ही है क्योंकि पानी के बिना कमल कैसे रह सकते हैं?

शशांकनिर्मला कीर्तिः, सौभाग्यं भाग्यमेव च।
आदेयवचनत्वं च, भवेद् विनयतः सताम्।।

विनय से सज्जन पुरुषों को चंद्रमा के समान निर्मल कीर्ति, सौभाग्य, भाग्य और ग्राह्यवचनता प्राप्त होती है।

विनयेन समं किंचित्, नास्ति मित्रं जगत्त्रये।
यस्मात् तेनैव विद्यानां, रहस्यमुपलभ्यते।।

विनय के समान तीनों जगत में कोई मित्र नहीं है क्योंकि विनय से ही विद्याओं का रहस्य प्राप्त होता है।

अभ्यास

पाठ आधारित प्रश्न

प्रश्न 1 – वस्तुनिष्ठ प्रश्न –

1. किसके बिना समस्त व्रत नष्ट हो जाते हैं?
   (क) उदारता (ख) विनय
   (ग) कंजूसी (घ) चालाकी
2. तीनों जगत में किसके समान मित्र नहीं है?
   (क) पानी (ख) विनय
   (ग) बैर (घ) विद्या
3. विनय की भावना क्यों भाना चाहिए –
   (क) ज्ञान प्राप्ति के लिए (ख) आचार की शुद्धि के लिए
   (ग) आराधना के लिए (घ) उक्त सभी विकल्प

प्रश्न 2 – रिक्त स्थान की पूर्ति करो –

1. क्रोध .... कथंचन।
2. शशांक .... सताम्।
3. विनश्यन्ति .... कथम्।
4. विनयेन समं .... रहस्यमुपलभ्यते।

प्रश्न 3 – लघूत्तरात्मक प्रश्न –

1. विनयवान मनुष्य का बैरी कौन नहीं होता?
2. मनुष्य को विनय क्यों करनी चाहिए?
3. विनय से सज्जन पुरुषों को क्या मिलता है?
4. विनय से किसका रहस्य प्राप्त होता है?

प्रश्न 4 – पाठ से आगे –

विनय के समान अन्य विषयों के सुभाषित श्लोक खोजकर याद करो।

प्यारे बच्चो !!

आप अपने प्यारे-प्यारे जन्मदिन पर -

- अपने निर्दोष परमात्मा/इष्टदेव का दर्शन/स्मरण करो।
- अपने दादा-दादी, नाना नानी, माता-पिता और अन्य बड़े जनों का चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करो।
- विद्यालय में गुरुजनों के चरण स्पर्श कर आशीर्वाद प्राप्त करो।
- अपने मित्रों के बीच फल, नारियल चटक, मिश्री वितरण करके शुभकामनाएँ प्राप्त करो।
- मन्दिर में दान करो।
- बालक-बालिकाओं को कॉपी-पेन आदि उपहार में देकर शुभकामनाएँ प्राप्त करो।

जन्मदिन के अवसर पर -

- मोमबत्ती जलाकर बुझाने का काम मत करो।
- बाजार में बने हुए केमिकल युक्त नुकसानदायक केक काटकर खाना-खिलाना मत करो।
- माता-पिता पर दबाव डालकर उपहार लेना, पैसा माँग कर मित्रों के बीच तन-मन-धन बिगाड़ने वाली पार्टी आदि मत करो।

आपके जन्मदिन के अवसर पर 'धरोहर' परिवार की मंगल शुभकामनाएँ हैं कि आप अपनी भारतीय संस्कृति रूप धरोहर को अच्छी तरह संभालें।

आपका जीवन मंगलमय होगा।

समर्पण चैरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर

समर्पण

अनुशासन के सूत्र

- प्रत्येक कार्य समय पर करना चाहिए।
- प्रत्येक वस्तु को नियत स्थान पर रखना चाहिए।
- गुरुजनों को ज्ञात कराये बिना, कोई नवीन कार्य न करना चाहिए।
- भूल को सहजता से स्वीकार करना चाहिए।
- अपने लक्ष्य को प्रतिदिन दोहराना चाहिए।
- गुरुजनों के वचनों का आदर करते हुए अपने वचनों का निर्वाह करना चाहिए।

धरोहर